युवा
नईदुनिया मीडिया प्रा. लि. का प्रकाशन

सूचना
जॉब दुनिया पेज नं. 4 पर देखें।

सही मायने में हमारी जिंदगी में अगर मौजूदा वक्त में किसी चीज की अहमियत है, तो वह है प्लास्टिक। यानी हमारे घर में रखा टेलिविजन हो या फिर उसका छोटा सा रिमोट प्लास्टिक का है। यही नहीं सुबह उठकर हाथ में अगर हम टूथब्रश थामते हैं, तो वह भी प्लास्टिक का ही होता है। अलबत्ता हमारी रोजमर्रा की जिंदगी में घर से लेकर दफ्तर तक और जहां हम आते-जाते हैं हर जगह कहीं न कहीं प्लास्टिक का वजूद होता है और यह हमारे लिए जरूरी होती है। या यूं कहें कि हमारे चारों तरफ प्लास्टिक का राज है। लेकिन इस प्लास्टिक की अहमियत का अंदाजा इस बात से भी लगाया जा सकता है कि मौजूदा वक्त में कॅरियर को लेकर परेशान युवाओं को प्लास्टिक अपनी तरफ खींच रही है। मसलन युवाओं के लिए प्लास्टिक इंजीनियरिंग इन हॉट कॅरियर ऑप्शन बन चुकी है। क्योंकि आने वाले सालों में प्लास्टिक इंजीनियर्स के लिए 85 लाख नौकरियां होंगी।

शाहिद खान

हॉट कॅरियर ऑप्शन

प्लास्टिक इंजीनियरिंग

100% जॉब गारंटी

सारी दुनिया में प्लास्टिक इंडस्ट्री तेजी से बढ़ रही है। इसलिए प्लास्टिक टेक्नोलॉजिस्ट और इंजीनियर्स की मांग बहुत ज्यादा है। ऐसे में अन्य प्रोफेशनल कोर्सेस की जगह प्लास्टिक इंजीनियरिंग को चुनने वालों का भविष्य उज्ज्वल है। क्योंकि इस फील्ड को चुनने वालों के लिए सौ फीसदी जॉब गारंटी होती है।
पीके साहू, मुख्य प्रबंधक (परियोजना) सिपेट

क्या है प्लास्टिक इंजीनियरिंग

प्लास्टिक इंजीनियरिंग के पाठ्यक्रम को चार डिवीजन में बांटा गया है। पहली कड़ी को डिजाइन सेंटर कहा जाता है, जिसमें कंप्यूटर पर प्रोडक्ट के डिजाइन को बनाने और फाइनल करने का काम किया जाता है। इसके लिए कैड, कैम और सीएई जैसे डिजाइनिंग सॉफ्टवेयर का इस्तेमाल होता है। इसके बाद बारी आती है टूल रूम की। इसमें प्रोडक्ट का मोल्ड यानी सांचा बनाया जाता है। तीसरे डिवीजन को प्रोसेसिंग डिपार्टमेंट के नाम से जाना जाता है। इसमें स्टूडेंट को बनाए हुए सांचे को मशीन में लगाकर प्रोडक्ट को तैयार करना होता है। चौथी और आखिरी कड़ी को टेस्टिंग लेबोरेट्री कहते हैं। इसमें तैयार प्रोडक्ट को जांचा जाता है कि वह मानकों के मुताबिक तैयार है या नहीं ।

85 लाख नौकरियां

भारत सरकार ने प्लास्टिक उद्योग को उच्च प्राथमिकता वाला क्षेत्र माना है। इसका कारण यह है कि अन्य प्राकृतिक संसाधनों की तुलना में बुनियादी आवश्यकताओं की पूर्ति में प्लास्टिक एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। इसके साथ ही कृषि और जलप्रबंधन, इलेक्ट्रॉनिक, सुरक्षा और ऊर्जा निर्माण आदि में भी प्लास्टिक एक महत्वपूर्ण घटक है। प्लास्टिक का बहुतायत में पैकेजिंग, घरेलू उत्पाद कम्यूनिकेशन मशीन और मशीन टूल्स इंडस्ट्री में उपयोग होता है। भारत में प्लास्टिक उत्पादों की मांग में सालाना 10 से 15 फीसदी का इजाफा हो रहा है। साथ ही इसकी खपत 2015 तक 2200 मिलियन टन होने की उम्मीद है। प्लास्टिक की खपत और बढ़ती मांग से आने वाले सालों में प्लास्टिक सेक्टर में 85 लाख रोजगार यानी नौकरियां होंगी।

आम आदमी की आम जरूरतों से लेकर उद्योग जगत तक में प्लास्टिक अपनी गहरी पैठ बना चुका है। बीते दशक में इस उद्योग का बहुत ही तेजी से विकास हुआ है। लिहाजा इस क्षेत्र में रोजगार की उम्मीदें भी बढ़ती जा रही हैं। प्लास्टिक के इसी बढ़ते प्रभाव को देखते हुए युवा प्लास्टिक टेक्नोलॉजी की पढ़ाई कर इसमें चमकता कॅरियर बनाने की दौड़ में शामिल हो रहे हैं।

गौरतलब है कि प्लास्टिक वह पोलीमेटिक सामग्री है, जिसे किसी भी शक्ल में ढाला जा सकता है। प्लास्टिक उद्योग के प्रोशन्ल्स प्लास्टिक के दानों को इंजेक्शन, थर्मोफार्मिंग और थ्रमोसेटिंग्स जैसी प्रक्रियाओं द्वारा तैयार उत्पाद में बदलते हैं। खिलौनों से लेकर घरेलू सामान और विभिन्न औद्योगिक वस्तुओं में प्लास्टिक का उपयोग बहुत अधिक मात्रा में किया जा रहा है। इसके अलावा ऑटोमोबाइल्स, रेडियो और टेलीविजन सेट, मोबाइल इलेक्ट्रॉनिक्स, पेंट्स, सिंथेटिक टेक्सटाइल, मेडिकल और सर्जिकल उपकरणों में भी प्लास्टिक का जमकर इस्तेमाल किया जा रहा है। आर्थिक उदारीकरण और घटती आयात ड्यूटी ने भी प्लास्टिक उद्योग का ग्राफ ऊंचा किया है।

इन्हें है जरूरत

सार्वजनिक क्षेत्र में प्लास्टिक इंजीनियर्स, ऑयल एंड नेच्युरल गैस कमीशन, ऑयल इंडिया लेबोरेट्रीज, इंजीनियरिंग संयंत्रों, पेट्रोकेमिकल्स, इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ पेट्रोलियम सहित विभिन्न राज्यों में पोलीमर्स कार्पोरेशन, पेट्रोलियम कंजर्वेश, पेट्रोलियम को-ऑपरेटिव लिमिटेड आदि में कॅरियर के अच्छे अवसर हैं।

कैसे करें इंट्री

प्लास्टिक इंजीनियर बनने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित होने वाले इंट्रेंस एग्जाम (जेईई) को पास करना होता है। इस परीक्षा में सम्मिलित होने वाले इच्छुक अभ्यर्थी का विज्ञान, गणित और अंग्रेजी विषयों में 60 फीसदी अंकों के साथ 10+2 उत्तीर्ण होना जरूरी है।

सैलरी

प्रशिक्षण के दौरान ही अंतिम छह माह से कंपनियों में कार्य का प्रैक्टिकल अनुभव प्राप्त करने के लिए भेजे गए छात्रों को छह से आठ हजार रुपए दिए जाते हैं। इसके बाद कैंडिडेट्स की औसत सैलरी प्रतिमाह 10 से 16 हजार रुपए होती है, जो कि अनुभव बढ़ने के साथ लाखों तक पहुंचती है। मौजूदा वक्त में सिपेट से निकले प्लास्टिक इंजीनियर्स देश ही नहीं विदेशों में भी अच्छी सैलरी ले रहे हैं।

कोर्सेज

पीजी कोर्स
- एमटेक (प्लास्टिक इंजीनियरिंग/टेक्नोलॉजी)
- एमटेक (पॉलीमर, नैनो टेक्नोलॉजी)
- एमटेक (कैड/कैम/सीएई)

अंडर ग्रेजुएट
- बीटेक (प्लास्टिक इंजीनियरिंग/टेक्नोलॉजी)

पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा
- प्लास्टिक प्रोसेसिंग एंड टेस्टिंग (पीजीडी-पीपीटी)

पोस्ट डिप्लोमा
- प्लास्टिक मोल्ड डिजाइन (पीडी-पीएमडी)

डिप्लोमा
- प्लास्टिक टेक्नोलॉजी (डीपीटी)

कहां-कहां है सिपेट

सेन्ट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ प्लास्टिक्स इंजीनियरिंग एण्ड टेक्नोलॉजी (सिपेट) भारत का प्रधान राष्ट्रीय संस्थान है, जो प्लास्टिक्स एवं संबद्ध उद्योगों हेतु शैक्षिक, प्रौद्योगिकी सहायता एवं अनुसंधान (एटीआर) के लिए जाना जाता है। पहला सिपेट कैंपस चेन्नई में 1968 में भारत सरकार द्वारा स्थापित किया गया था। इसके बाद 15 सिपेट कैंपस स्थापित किए गए। मौजूदा वक्त में अहमदाबाद, अमृतसर, औरंगाबाद, भोपाल, भुवनेश्वर, चेन्नई, गुवाहाटी, हैदराबाद, हाजीपुर, हल्दिया, जयपुर, इम्फाल, लखनऊ, मैसूर एवं पानीपत में सिपेट संस्थान संचालित हो रहे हैं। जो भारत एवं विदेशों के उद्योगों को एटीआर सेवा द्वारा योगदान प्रदान कर रहे हैं। साथ ही डिजाइन, कैड/कैम/ सीएई, टूलिंग एवं मोल्ड निर्माण, प्लास्टिक्स प्रोसेसिंग, परीक्षण एवं गुणवत्ता नियंत्रण के क्षेत्रों में समरूपी बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध हैं।

बोले स्टूडेंट

मेरे बड़े भाई दिल्ली में इंजीनियर हैं, जिनके साथ प्लास्टिक इंजीनियरिंग के काफी स्टूडेंट काम कर रहे हैं। भैया के कहने पर मैंने यह कोर्स चुना, लेकिन अब मुझे लगता है कि यह बहुत शानदार है और इसमें कॅरियर को ऊंचाइयों पर ले जाया जा सकता है। अपने सीनियर्स के बारे में भी मैंने जाना कि वह बड़ी-बड़ी कंपनियों में काम कर रहे हैं। यह देखकर लगता है कि मेरा फ्यूचर ब्राइट होगा।

शुभांजलि श्रीवास्तव, वाराणसी

मुझे प्लास्टिक इंजीनियरिंग में शुरुआत से ही इंट्रेस्ट था। क्योंकि मैं हमेशा से प्लास्टिक के बारे में जानने की कोशिश करता था। आज मैं प्लास्टिक के बारे में काफी कुछ जानता हूं और मुझे पता है कि प्लास्टिक इंजीनियरिंग के क्षेत्र में जॉब की सर्च करने जैसी प्रॉबलम तो है ही नहीं।

हार्दिक कलम, मेघ नगर

मुझे मेरे दोस्तों ने प्लास्टिक इंजीनियरिंग के बारे में बताया था। मैंने इंट्रेंस एग्जाम दिए और मैं पास हो गया। लेकिन आज मैं महसूस करता हूं कि मैंने दोस्तों की बात मानकर एक अच्छा फैसला लिया है। क्योंकि मुझे नहीं लगता कि कोर्स पूरा करने के बाद मुझे जॉब के लिए भटकना पड़ेगा।

सौरव कुमार, हाजीपुर

मुझे हमेशा से प्लास्टिक में इंट्रेस्ट रहा है और मैं प्लास्टिक इंडस्ट्री में अपना कॅरियर बनाना चाहती हूं। बीएससी के बाद मैंने प्लास्टिक इंजीनियरिंग को चुना है और मैं इसके बाद एमबीए करूंगी। क्योंकि इंडस्ट्री के लिए मैनेजमेंट का होना जरूरी है। रही जॉब की बात, तो प्लास्टिक इंजीनियर बनने के बाद मुझे जॉब्स की कमी नहीं होगी।

शीतल सुने, भोपाल

यह काफी ग्रोइंग फील्ड है। अगर इसमें हमारा अच्छा परफार्मेंस होगा, तो बढ़ते ही जाना है। क्योंकि प्लास्टिक अब शायद ही हमारी लाइफ से कभी बाहर होगा, तो इसका मार्केट भी बढ़ना ही है। ऐसे में जॉब लेस होने का डर भी नहीं है। हालांकि मैं प्लास्टिक इंजीनियरिंग के बाद अपनी खुद की इंडस्ट्री बनाना चाहती हूं।

नीतू नागर, राजगढ़

मैंने अपने दोस्तों से प्लास्टिग इंजीनियरिंग के बारे में सुना था। इसके बाद मैंने इसके लिए ट्राय किया, तो मुझे एडमिशन मिल गया। अब लगता है कि कॅरियर के लिए यह मेरा बेहतर फैसला था। मैंने सोचा है कि कोर्स कंप्लीट होने के बाद कुछ साल जॉब करूंगी और बाद में खुद की इंडस्ट्री।

लिपिका तालुकदार, असम